

श्रीमद् भागवत रसिक कुटुंब

श्री हित चौरासी जी



||1||

जोई-जोई प्यारौ करै सोई मोहि भावै,
भावै मोहि जोई सोई-सोई करै प्यारे ।
मोकों तो भावती ठौर प्यारे के नैनन में,
प्यारौ भयौ चाहै मेरे नैनन के तारे ॥
मेरे तन मन प्राण हूँ ते प्रीतम प्रिय,
अपने कोटिक प्राण प्रीतम मोंसों हारे ।
जै श्रीहित हरिवंश हंस-हंसिनी साँवल-गौर,
कहौ कौन करै जल-तरंगनी न्यारे ॥1॥

||2||

प्यारे बोली भामिनी आजु नीकी जामिनी,
भेंटी नवीन मेघ सों दामिनी ।
मोहन रसिक-राइरी माई,
तासौं जु-मान करै, ऐसी कौन कामिनी ।

(जै श्री) हित हरिवंश श्रवण सुनत प्यारी,
राधिका रवन सों मिली गज-गामिनी ॥2॥

॥3॥

प्रात समय दोऊ रस लंपट, सुरत-जुद्ध जय-जुत अति फूल ।
श्रम वारिज घनविन्दु वदन पर, भूषण अंगहि अंग विकूल ॥
कछु रह्यौ तिलक शिथिल अलकावलि, वदन कमल मानौं अलि भूल ।
जै श्री हित हरिवंश मदन-रंग रँगि रहे, नैन बैन कटि शिथिल दुकूल ॥3॥

॥4॥

आजु तौ जुवति तेरौ, वदन आनन्द भयौं,
पिय के संगम के सूचत सुख चैन ।
आलस-वलित बोल, सुरंग रँगे कपोल,
विथकित अरुण उनींदे दोऊ नैन ॥
रुचिर तिलक-लेश, किरत कुसुम-केश,
सिर सीमंत भूषित मानौं तैं न ।
करुणा करि उदार, राखत कछु न सार,
दसन-वसन लागत जब देंन ॥
काहे कौं दुरत भीरु, पलटे प्रीतम चीर,
बस किये श्याम सिखै शत मैन ।
गलित उरसि माल, सिथिल किंकिणी जाल,
(जै श्री) हित हरिवंश लता-गृह सैन ॥4॥

॥५॥

आजु प्रभात लता-मंदिर में, सुख बरसत अति हरषि युगल वर ।
गौर श्याम अभिराम रंगभरे, लटकि-लटकि पग धरत अवनि पर ॥
कुच-कुमकुम रंजित मालावलि, सुरत नाथ श्रीश्याम धाम धर ।
प्रिया प्रेम के अंक अलंकृत, चित्रित चतुर-शिरोमणि निजकर ॥
दम्पति अति अनुराग मुदित कल, गान करत मन हरत परस्पर ।
(जैश्री) हित हरिवंश प्रशंस-परायण, गायन अलि सुर देत मधुर तर ॥५॥

॥६॥ (राग विभास)

कौन चतुर जुवती प्रिया, जाहि मिलन लाल चोर है रैन ।
दुरवत क्यों अब दूरै सुनि प्यारे, रंग में गहिले चैन में नैन ॥
उर नख चंद विराने पट, अटपटे से बैन ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक, राधापति, प्रमथीत मैन ॥६॥

॥७॥

आजु निकुंज मंजु में खेलत, नवल किशोर नवीन किशोरी ।
अति अनुपम अनुराग परस्पर, सुनि अभूत भूतल पर जोरी ॥
विद्रुम फटिक विविध निर्मित धर, नव कर्पूर पराग न थोरी ।
कोमल किसलय सैन सुपेशल, तापर श्याम निवेसित गोरी ॥
मिथुन हास-परिहास परायण, पीक कपोल कमल पर झोरी ।
गौर श्याम भुज कलह मनोहर, नीवी-बंधन मोचत डोरी ॥
हरि-उर-मुकुर विलोकि अपनपौ, विभ्रम विकल मान-जुत भोरी ।

चिबुक सुचारु प्रलोड प्रबोधत, पिय-प्रतिबिंब जनाय निहोरी ॥
नेति-नेति बचनामृत सुनि-सुनि, ललितादिक देखत दुरि चोरी ।
जै श्री हित हरिवंश करत कर धूनन, प्रणयकोप मालावलि तोरी ॥७॥

॥८॥

अति ही अरुण तेरे नैन नलिन री ।
आलस जुत इतरात रंगमगे, भये निशि जागर मखिन मलिन री ॥
शिथिल पलक में उठत गोलक गति, विधयौ मोहन मृग सकत चलि न री ।
जै श्री हित हरिवंश हंस कल गामिनि, संभ्रम देत भ्रमरनि अलिन री ॥८॥

॥९॥ (सारंग)

बनी श्रीराधा मोहन जू की जोरी ।
इंद्रनीलमणि श्याम मनोहर, सातकुम्भ तनु गोरी ॥
भाल बिशाल तिलक हरि कामिनी, चिकुर चन्द्र बिच रोरी ।
गज-नायक प्रभु चाल गयंदनी, गति बृषभानु किसोरी ॥
नील निचोल जुवती मोहन पट, पीत अरुण सिर खोरी.
जै श्री हित हरिवंश रसिक राधापति, सुरत रंग में बोरी ॥९॥

॥१०॥ (सारंग)

आजु नागरी-किशोर, भाँवती विचित्र जोर,
कहा कहौं अंग-अंग परम माधुरी ।
करत केलि कंठ मेलि, बाहुदंड, गंड – गंड,
परस, सरस रास लास मंडली जुरी ॥

श्याम- सुन्दरी बिहार, बाँसुरी मृदंग तार,
मधुर घोष नूपुरादि किंकिणी चुरी ।
(जै श्री) देखत हरिवंश आलि, निर्तनी सुधंग चाल,
वारि फेरी देत प्राण देह सौँ दुरी ॥10॥

॥11॥

मंजुल कल कुंज देश, हरि विशद वेष,
राका नभ कुमुद – बंधु, शरद जामिनी ।
साँवल दुति कनक अंग, बिहरत मिलि एक संग,
नीरद मनौ नील मध्य, लसत दामिनी ॥
अरुण पीत नव दुकूल, अनुपम अनुराग मूल,
सौरभयुत सीत अनिल, मंद गामिनी ।
किसलय दल रचित शैन, बोलत पिय चाटु बैन,
मान सहित प्रतिपद, प्रतिकूल कामिनी ॥
मोहन मन मथत मार, परसत कुच-नीवी-हार,
वेपथयुत नेति नेति, बदति भामिनी ॥
नरवाहन प्रभु सुकेलि, बहुविधि भर भरत झेलि,
सौरत रस रूप नदी जगत पावनी ॥11॥

॥12॥

चलहि राधिके सुजान, तेरे हित सुख निधान,
रास रच्यौ श्याम तट कलिंद-नन्दिनी ।
निर्तत युवती समूह, राग रंग अति कुतूह,

बाजत रसमूल मुरलिका अनन्दिनी ।
वंशीवट निकट जहाँ, परम रमणि भूमि तहाँ,
सकल सुखद मलय बहै वायु मन्दिनी ।
जाती ईषद विकास, कानन अतिसय सुवास,
राका निशि शरद मास, विमल चन्दिनी ॥
नरवाहन प्रभु निहारि, लोचन भरि घोष-नारि,
नख-सिख सौन्दर्य काम-दुख-निकन्दिनी ।
विलसहु भुज ग्रीव मेलि, भामिनि सुख-सिन्धु झेलि,
नव निकुंज श्याम केलि जगत वन्दिनी ॥12॥

॥13॥

नन्द के लाल हर्यौ मन मोर ।
हौं अपने मोतिन लर पोवति, काँकर डारि गयौ सखि भोर ॥
बंक विलोकनि चाल छबीली, रसिक शिरोमणि नन्द किसोर ।
कहि कैसे मन रहत श्रवण सुनि, सरस मधुर मुरली की घोर ॥
इंदु गोविन्द वदन के कारण, चितवन कौं भये नैन चकोर ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक रस जुवती, तू लै मिलि सखि प्राण अकोर ॥13॥

॥14॥

अधर अरुन तेरे कैसे कै दुराऊँ ।
रवि शशि शंक भजन कियौ अपवस, अद्भुत रंगन कुसुम बनाऊँ ॥
सुभ कौसेय कसिव कौस्तुभमणि, पंकज-सुतन ले अंगनि लुपाऊँ ।
हरषित इन्दु तजत जैसे जलधर, सो भ्रम ढूँढि कहाँ हों पाऊँ ॥

अम्बुन दम्भ कछू नहीं व्यापत, हिमकर तपै ताहि कैसे कैं बुझाऊँ ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक नवरंग पिय, भृकुटि भौंह तेरे खंजन लराऊँ ॥14॥

॥15॥

अपनी बात मोसौं कहि री भामिनी,
औंगी मौंगी रहति गरव की माती ।
हौं तोसौं कहत हारी, सुनिरी राधिका प्यारी,
निशि कौ रंग क्यों न कहत लजाती ॥
गलित कुसुम बैनी, सुनिरी सारंग-नैनी,
छूटी लट अचरा बदत अरसाती ।
अधर निरंग रँग रच्यौरी कपोलन,
जुवति चलति गजगति अरुझाती ॥
रहसि रमी छबीले, रसन बसन ढीले,
शिथिल कसनि कंचुकी उर राती ॥
सखी सौं सुनी श्रवन, वचन मुदित मन,
चलि हरिवंश भवन मुसिकाती ॥15॥

॥16॥

आज मेरे कहे चलौ मृगनैनी ।
गावत सरस जुवति मंडल में, पिय सौं मिलैं भलें पिकबैनी ॥
परम प्रवीण कोक-विद्या में, अभिनय निपुन लाग-गति लैनी ।
रूपरासि सुनि नवल किशोरी, पल-पल घटत चाँदनी रैनी ॥

जै श्री हित हरिवंश चली अति आतुर, राधारवन सुरत सुख दैनी।
रहसि रभस आलिंगन चुम्बन, मदन कोटि कुल भई कुचैनी ।।16।।

।।17।।

आजु देखि ब्रज-सुन्दरी मोहन बनी केलि ।
अंस-अंस बाहु दै, किशोर जोर रूप रासि,
मनौ तमाल अरुझि रही सरस कनक बेलि ।।
नव निकुंज भ्रमर गुंज, मंजु घोष प्रेम पुंज,
गान करत मोर पिकनि अपने सुर सों मेलि ।
मदन मुदित अंग-अंग, बीच-बीच सुरत रंग,
पल-पल हरिवंश पिवत नैन चषक झेलि।।17।।

।।18।।

सुनि मेरौ वचन छबीली राधा । तैं पायौ रससिंधु अगाधा ।।
तू वृषवानु गोप की बेटी । मोहनलाल रसिक हँसि भेटी ।।
जाहि बिरंचि उमापति नाये । तापै तैं वन-फूल बिनाये ।।
जो रस नेति नेति श्रुति भाख्यौ । ताकौ तैं अधर सुधारस चाख्यौ ।।
तेरौ रूप कहत नहिं आवै । जै श्री हित हरिवंश कछुक जस गावै ।।18।।

।। 19 ।।

खेलत रास रसिक ब्रज-मंडन । जुवतिन अंस दिये भुज दंडन ।।
सरद विमल नभ चन्द्र विराजै । मधुर-मधुर मुरली कल बाजै ।।
अति राजत घनश्याम तमाला । कंचन-बेलि बनी ब्रजबाला ।।

बाजत ताल मृदंग उपंगा । गान मथत मन कोटि अनंगा ॥
भूषण बहुत विविध रंग सारी । अंग सुधंग दिखावत नारी ॥
बरसत कुसुम मुदित सुरयोषा । सुनियत दिवि दुंदुभि कल घोषा ॥
जै श्री हित हरिवंश मगन मन श्यामा । राधारवन सकल सुख धामा ॥ 19 ॥

॥20॥

मोहनलाल के रसमाती ।

वधू गुपति-गोवति कत मोसौं, प्रथम नेह सकुचाती ॥
देखी सँभार पीत पट ऊपर, कहाँ चूनरी राती ।
टूटी लर लटकत मोतिन की, नख बिधु अंकित छाती ॥
अधर-बिंब खंडित मषि मंडित, गंड चलति अरुझाती ।
अरुण नैन घूमत आलस जुत, कुसुम गलित लटपाती ॥
आजु रहसि मोहन सब लूटी, विविध आपुनी थाती ।
जै श्री हित हरिवंश वचन सुनि भामिनि, भवन चली मुसकाती ॥20॥

॥21॥

तेरे नैन करत दोउ चारी ।

अति कुलकात समात नहीं कहूँ, मिले हैं कुंज विहारी ॥
विथुरी माँग कुसुम गिरि गिरि परें, लटकि रही लट न्यारी ।
उर नख रेख प्रकट देखियत हैं, कहा दुरावति प्यारी ॥
परी है पीक सुभग गंडनि पर, अधर निरँग सुकुमारी ।
जै श्री हित हरिवंश रसिकनी भामिनि, आलस अँग अँग भारी ॥21॥

॥ 22 ॥

नैननिं पर वारौं कोटिक खंजन ।

चंचल चपल अरुन अनियारे, अग्र भाग बन्यौ अंजन ॥

रुचिर मनोहर बंक बिलोकनि, सुरत समर दल गंजन ।

जै श्री हित हरिवंश कहत न बनै छबि, सुख समुद्र मन रंजन ॥ 22 ॥

॥ 23 ॥

राधा प्यारी ! तेरे नैन सलोल ।

तैं निज भजन कनक तन जोवन, लियौ मनोहर मोल ॥

अधर निरंग अलक लट छूटी, रंजित पीक कपोल ।

तूँ रस मगन भई नहिं जानत, ऊपर पीत निचोल ॥

कुच जुग पर नख रेख प्रकट मानौं, संकर सिर ससि टोल ।

जै श्री हित हरिवंश कहत कछू भामिनि, अति आलस सौं बोल ॥ 23 ॥

॥ 24 ॥

आजु गोपाल रास रस खेलत, पुलिन कलपतरु तीर री सजनी ।

सरद विमल नभ चंद विराजत, रोचक त्रिविध समीर री सजनी ॥

चंपक बकुल मालती मुकुलित, मत्त मुदित पिक कीर री सजनी ।

देसी सुधंग राग रँग नीकौ, ब्रज जुवतिनि की भीर री सजनी ॥

मघवा मुदित निसान बजायौ, व्रत छाँड़्यौ मुनि धीर री सजनी ।

जै श्री हित हरिवंश मगन मन स्यामा, हरति मदन घन पीर री सजनी ॥ 24 ॥

॥ 25 ॥

आज नीकी बनी श्रीराधिका नागरी ।
ब्रज जुवति जूथ में रूप अरु चतुरई,
सील सिंगार गुन सबनि तें आगरी ॥
कमल दच्छिन भुजा बाम भुज अंस सखि,
गाँवती सरस मिलि मधुर सुर राग री ।
सकल विद्या विदित, रहसि 'हरिवंश हित',
मिलत नव कुंज वर स्याम बड़ भाग री ॥ 25 ॥

॥ 26 ॥

मोहनी मदन गोपाल की बाँसुरी ।
माधुरी श्रवन पुट, सुनत सुनु राधिके,
करत रतिराज के ताप कौ नासुरी ॥
सरद राका रजनी, विपिन वृंदा सजनि,
अनिल अति मंद सीतल सहित बासु री ।
परम पावन पुलिन, भृंग सेवत नलिन,
कल्पतरु तीर बलवीर कृत रासु री ॥
सकल मंडल भलीं, तुम जु हरि सौं मिलीं,
बनी वर वनित उपमा कहौं कासु री ।
तुम जु कंचन तनी, लाल मरकत मनी,
उभय कल हंस 'हरिवंश' बलि दासुरी ॥ 26 ॥

॥ 27 ॥

मधुरितु वृन्दावन आनन्द न थोर ।
राजत नागरि नव कुसल किशोर ॥
जूथिका जुगल रूप मञ्जरी रसाल ।
विथकित अलि मधु माधवी गुलाल ॥
चंपक बकुल कुल विविध सरोज ।
केतकि मेदनि मद मुदित मनोज ॥
रोचक रुचिर बहै त्रिविध समीर ।
मुकुलित नूत नदित पिक कीर ॥
पावन पुलिन घन मंजुल निकुंज ।
किसलय सैन रचित सुख पुंज ॥
मंजीर मुरज डफ मुरली मृदंग ।
बाजत उपंग बीना वर मुख चंग ॥
मृगमद मलयज कुंकुम अबीर ।
बंदन अगरसत सुरँगित चीर ॥
गावत सुंदरि हरि सरस धमारि ।
पुलकित खग मृग बहत न वारि ॥
(जै श्री) हित हरिवंश हंस हंसिनी समाज ।
ऐसे ही करौ मिलि जुग जुग राज ॥ 27 ॥

॥ 28 ॥

राधे देखि वन की बात ।

रितु बसंत अनंत मुकुलित, कुसुम अरु फल पात ॥

बैनु धुनि नंदलाल बोली, सुनिव क्यौं अर सात ।

करत कतव विलंब भामिनि, वृथा औसर जात ॥

लाल मरकत मनि छबीलौ, तुम जु कंचन गात ।

बनी (श्री) हित हरिवंश जोरी, उभै गुन गन मात ॥ 28 ॥

॥ 29 ॥

ब्रज नव तरुणि कदंब मुकुट मणि, स्यामा आजु बनी ।

नख सिख लौं अंग अंग माधुरी, मोहे स्याम धनी ॥

यौं राजत कबरी गूंथित कच, कनक कंज वदनी ।

चिकुर चंद्रिकनि बीच अरध बिधु, मानौं ग्रसित फनी ॥

सौभग रस सिर श्रवत पनारी, पिय सीमंत ठनी ।

भृकुटि काम कोदंड नैन सर, कज्जल रेख अनी ॥

तरल तिलक तांटक गंड पर, नासा जलज मनी ।

दसन कुंद सरसाधर पल्लव, प्रीतम मन समनी ॥

चिबुक मध्य अति चारु सहज सखि, साँवल बिंदु कनी ।

प्रीतम प्रान रतन संपुट कुच, कंचुकि कसिब तनी

भुज मृनाल वल हरत वलय जुत, परस सरस श्रवनी

स्याम सीस तरु मनौं मिडवारी, रची रुचिर रवनी ॥

नाभि गम्भीर मीन मोहन मन, खेलनि कौं हृदनी ।

कृस कटि पृथु नितंब किंकिनि वृत, कदलि खंभ जघनी ॥

पद अंबुज जावक जुत भूषण, प्रीतम उर अवनी ।
नव नव भाइ विलोभि भाम इभ, विहरत वर करिनी ॥
जै श्री हित हरिवंश प्रसंशित स्यामा, कीरति विशद घनी ।
गावत श्रवननि सुनत सुखाकर, विस्व दुरित दवनी ॥ 29 ॥

॥ 30 ॥

देखत नव निकुंज सुनु सजनी, लागत है अति चारु ।
माधविका केतकी लता ले, रच्यौ मदन आगार ॥
सरद मास राका निसि सजनी सीतल, मंद सुगंध समीर ।
परिमल लुब्ध मधुव्रत विथकित, नदित कोकिला कीर ॥
वहु विध रङ्ग मृदुल किसलय दल, निर्मित पिय सखि सेज ।
भाजन कनक विविध मधु पूरित, धरे धरनी पर हेज ॥
तापर कुसल किसोर किसोरी, करत हास परिहास ।
प्रीतम पानि उरज वर परसत, प्रिया दुरावति वास ॥
कामिनि कुटिल भृकुटि अवलोकत, दिन प्रतिपद प्रतिकूल ।
आतुर अति अनुराग विवस हरि, धाइ धरत भुज मूल ॥
नागर नीवी बन्धन मोचत, ऐंचत नील निचोल ।
बधू कपट हठ कोपि कहत कल, नेति नेति मधु बोल ॥
परिरंभन विपरित रति वितरत, सरस सुरत निजु केलि ।
इंद्रनील मणिमय तरु मानौं, लसत कनक की बेली ॥
रति रन मिथुन ललाट पटल पर, श्रम जल सीकर संग ।
ललितादिक अंचल झकझोरति, मन अनुराग अभंग ॥

जै श्री हित हरिवंश जथामति बरनत, कृष्ण रसामृत सार ।
श्रवन सुनत प्रापक रति राधा, पद अंबुज सुकुमार ॥30॥

॥ 31 ॥

आजु अति राजत दम्पति भोर ।
सुरत रंग के रस में भीनें, नागरि नवल किशोर ॥
अंसनि पर भुज दियें विलोकत, इंदु वदन विवि ओर ।
करत पान रस मत्त परसपर, लोचन तृषित चकोर ॥
छूटी लटनि लाल मन करष्यौ, ये याके चित चोर ।
परिरंभन चुंबन मिलि गावत, सुर मंदर कल घोर ॥
पग डगमगत चलत बन विहरत, रुचिर कुंज घन खोर ।
जै श्री हित हरिवंश लाल ललना मिलि, हियौ सिरावत मोर ॥31॥

॥ 32 ॥

आजु बन क्रीडत स्यामा स्याम ।
सुभग बनी निसि सरद चाँदनी, रुचिर कुंज अभिराम ॥
खंडत अधर करत परिरंभन, ऐंचत जघन टुकूल ।
उर नख पात तिरीछी चितवन, दंपति रस सम तूल ॥
वे भुज पीन पयोधर परसत, वाम दृशा पिय हार ।
वसननि पीक अलक आकरषत, समर श्रमित सत मार ॥
पल पल प्रबल चौंप रस लंपट, अति सुंदर सुकुमार ।
(जै श्री) हित हरिवंश आजु तून टूटत, हौं बलि विसद विहार ॥32॥

॥ 33 ॥

आजु बन राजत जुगल किसोर ।

नंद नँदन वृषभानु नंदिनी, उठे उनीदें भोर ॥

डगमगात पग परत सिथिल गति, परसत नख ससि छोर ।

दसन बसन खंडित मखि मंडित, गंड तिलक कछु थोर ॥

दुरत न कच करजनि के रोकें, नैन अरुन अलि चोर ।

(जै श्री) हित हरिवंश सँभार न तन मन, सुरत समुद्र झकोर ॥33॥

॥ 34 ॥

बन की कुंजनि कुंजनि डोलनि ।

निकसत निपट साँकरी बीथिनि, परसत नाँहि निचोलनि ॥

प्रात काल रजनी सब जागे, सूचत सुख दृग लोलनि ।

आलसवंत अरुन अति व्याकुल, कछु उपजत गति गोलनि ॥

निर्तनि भृकुटि वदन अंबुज मृदु, सरस हास मधु बोलनि ।

अति आसक्त लाल अलि लंपट, बस कीने बिनु मोलनि ॥

विलुलित सिथिल श्याम छूटी लट, राजत रुचिर कपोलनि ।

रति विपरित चुंबन परिरंभन, चिबुक चारु टक टोलनि ॥

कबहुँ श्रमित किसलय सज्जा पर, मुख अंचल झकझोलनि ।

दिन हरिवंश दासि हिय सींचत, वारिधि केलि कलोलनि ॥34॥

॥ 35 ॥

झूलत दोऊ नवल किसोर ।

रजनी जनित रंग सुख सूचत, अंग अंग उठि भोर ॥

अति अनुराग भरे मिलि गावत, सुर मंदर कल घोर ।

बीच बीच प्रीतम चित चोरत, प्रिया नैन की कोर ॥

अबला अति सुकुमारि डरत मन, वर हिंडोर झँकोर ।

पुलकि पुलकि प्रीतम उर लागति, दे नव उरज अँकोर ॥

अरुझी विमल माल कंकन सौं, कुंडल सौं कच डोर ।

वेपथ जुत क्यो बने विवेचित, आनँद बढ़्यौ न थोर ॥

निरखि निरखि फूलत ललितादिक, विवि मुख चंद चकोर ।

दे असीस हरिवंश प्रसंसत, करि अंचल की छोर ॥35॥

॥ 36 ॥

आजु बन नीकौ रास बनायौ ।

पुलिन पवित्र सुभग जमुना तट, मोहन बैनु बजायौ ॥

कल कंकन किंकिनि नूपुर धुनि, सुनि खग मृग सचु पायौ ।

जुवतिनु मंडल मध्य स्याम घन, सारँग राग जमायौ ॥

ताल मृदङ्ग उपंग मुरज डफ, मिलि रससिंधु बढ़ायौ ।

विविध विशद वृषभानु नंदिनी, अंग सुघंग दिखायौ ॥

अभिनय निपुन लटकि लट लोचन, भृकुटि अनंग नचायौ ।

ताता थेई ताथेई धरत नौतन गति, पति ब्रजराज रिझायौ ॥

सकल उदार नृपति चूड़ामनि, सुख वारिद वरषायौ ।
परिरंभन चुंबन आलिंगन, उचित जुवति जन पायौ ॥
वरसत कुसुम मुदित नभ नाइक, इन्द्र निसान बजायौ ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक राधा पति, जस वितान जग छायाँ ॥ 36 ॥

॥ 37 ॥

बेगि चलहि उठि गहरु करति कत, निकुंज बुलावत लाल ।
हा राधा राधिका पुकारत, निरखि मदन गज ढाल ॥
करत सहाइ सरद ससि मारुत, फूटि मिली उर माल ।
दुर्गम तकत समर अति कातर, करहि न पिय प्रतिपाल ॥
(जै श्री) हित हरिवंश चली अति आतुर, श्रवन सुनत तेहि काल ।
लै राखे गिरि कुच बिच सुंदर, सुरत-सूर ब्रज बाल ॥ 37 ॥

॥ 38 ॥

चलहि किन मानिनि कुंज कुटीर ।
तो बिनु कुँवर कोटि बनिता जुत, मथत मदन की पीर ॥
गद-गद सुर, विरहाकुल, पुलकित, श्रवत बिलोचन नीर ।
क्वासि-क्वासि वृषभानु नन्दिनी, बिलपत विपिन अधीर ॥
वंशी विसिख, व्याल मालावलि, पंचानन पिक कीर ।
मलयज गरल, हुतासन मारुत, साखामृग -रिपु चीर ॥
जै श्री हित हरिवंश परम कोमल चित, चपल चली पिय तीर ।

सुनि भयभीत बज्र को पंजर, सुरत-सूर रणवीर ॥38॥

॥ 39॥

खेल्यो लाल चाहत रवन ।

रचि रचि अपने हाथ सँवार्यो, निकुंज भवन ॥

रजनी सरद मंद सौरभ सौं, सीतल पवन ।

तो बिनु कुँवरि काम की वेदन, मेटऽव कवन ॥

चलहि न चपल बाल मृगनैनी, तजिऽव मवन ।

जै श्री हित हरिवंश मिलऽव प्यारे की, आरति दवन ॥39॥

॥40॥

बैठे लाल निकुंज भवन ।

रजनी रुचिर मल्लिका मुकुलित, त्रिविध पवन ॥

तूँ सखी काम केलि मन मोहन, मदन दवन ।

वृथा गहरु कत करति कृसोदरी, कारन कवन ॥

चपल चली तन की सुधि बिसरी, सुनत श्रवन ।

(जै श्री) हित हरिवंश मिले रस लंपट, राधिका रवन ॥40॥

॥ 41॥

प्रीति की रीति रंगिलोइ जानै ।

जद्यपि सकल लोक चूड़ामनि, दीन अपनपौ मानै ॥

जमुना पुलिन निकुंज भवन में, मान मानिनी ठानै ।

निकट नवीन कोटि कामिनि कुल, धीरज मनहिं न आनै ॥

नस्वर नेह चपल मधुकर ज्यों, आँन आँन सौं बानै ।
(जै श्री) हित हरिवंश चतुर सोई लालहिं छाड़ि मेंड़ पहिचानै ॥41॥

॥ 42 ॥

प्रीति न काहु की कानि बिचारै ।
मारग अपमारग विथकित मन, को अनुसरत निवारै ॥
ज्यों सरिता साँवन जल उमगत, सनमुख सिंधु सिधारै ।
ज्यों नादहि मन दियें कुरंगनि, प्रगट पारधी मारै ॥
(जै श्री) हित हरिवंश हिलग सारँग ज्यों, सलभ सरीरहि जारै ।
नाइक निपुन नवल मोहन बिनु, कौन अपनपौ हारै ॥ 42 ॥

॥ 43 ॥

अति नागरि वृषभानु किसोरी ।
सुनि दूतिका चपल मृगनैनी, आकरषत चितवन चित गोरी ॥
श्रीफल उरज कंचन सी देही, कटि केहरि गुन सिंधु झकोरी ।
बैनी भुजंग चन्द्र सत वदनी, कदलि जंघ जलचर गति चोरी ॥
सुनि 'हरिवंश' आजु रजनी मुख, बन मिलाइ मेरी निज जोरी ।
जद्यपि मान समेत भामिनी, सुनि कत रहत भली जिय भोरी ॥ 43 ॥

॥ 44 ॥

चलि सुंदरि बोली वृंदावन ।
कामिनि कंठ लागि किन राजहि, तूँ दामिनि मोहन नौतन घन ॥
कंचुकी सुरंग विविध रँग सारी, नख जुग ऊन बने तरे तन ॥

ये सब उचित नवल मोहन कौं, श्रीफल कुच जोवन आगम धन ॥
अतिशय प्रीति हुती अंतरगत, (जै श्री) हित हरिवंश चली मुकुलित मन ।
निविड़ निकुंज मिले रस सागर, जीते सत रति राज सुरत रन ॥44॥

॥ 45॥

आवति श्रीवृषभानु दुलारी ।

रूप रासि अति चतुर सिरोमनि ,अंग अंग सुकुमारी ॥
प्रथम उबटि मज्जन करि सज्जित, नील बरन तन सारी ।
गुंथित अलक तिलक कृत सुंदर, सैदूर माँग सँवारी ॥
मृगज समान नैन अंजन जुत, रुचिर रेख अनुसारी ।
जटित लवंग ललित नासा पर, दसनावलि कृत कारी ॥
श्रीफल उरज कँसूभी कंचुकि कसि, ऊपर हार छबि न्यारी ।
कृस कटि उदर गँभीर नाभि पुट, जघन नितंबनि भारी ॥
मनों मृनाल भूषण भूषित भुज, स्याम अंस पर डारी ।
(जै श्री) हित हरिवंश जुगल करिनी गज, विहरत वन पिय प्यारी ॥45॥

॥ 46॥

विपिन घन कुंज रति केलि भुज मेलि रूचि,
स्याम स्यामा मिले सरद की जमिनी ।
हृदै अति फूल समतूल पिय नागरी,
करिनि करि मत्त मनौं विवध गुन रामिनी ॥
सरस गति हास परिहास आवेस बस,

दलित दल मदन बल कोक रस कामिनी ।
(जै श्री) हित हरिवंश सुनि लाल लावनि विधे,
प्रिया अति सूर सुख सुरत संग्रामिनी ॥46॥

॥ 47॥

वन की लीला लालहिं भावै ।
पत्र प्रसून बीच प्रतिबिंबहिं, नख सिख प्रिया जनावै ॥
सकुच न सकत प्रकट परिरंभन, अलि लंपट दुरि धावै ।
संभ्रम देति कुलकि कल कामिनि, रति रन कलह मचावै ॥
उलटी सबै समझि नैननि में, अंजन रेख बनावै ।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रीति रीति बस, सजनी स्याम कहावै ॥47॥

॥ 48॥

बनी वृषभानु नंदिनी आजु ।
भूषन वसन विविध पहिरे तन, पिय मोहन हित साजु ॥
हाव भाव लावन्य भृकुटि लट, हरति जुवति जन पाजु ।
ताल भेद औघर सुर सूचत, नूपुर किंकिनि बाजु ॥
नव निकुंज अभिराम स्याम सँग, नीकौ बन्यौ समाजु ।
(जै श्री) हित हरिवंश विलास रास जुत, जोरी अविचल राजु ॥48॥

॥ 49॥

देखि सखी राधा पिय केलि ।
ये दोउ खोरि खरिक गिरि गहवर, विहरत कुँवर कंठ भुज मेलि ॥

ये दोउ नवल किसोर रूप निधि, विटप तमाल कनक मनौ बेलि ।
अधर अदन चुंबन परिरंभन, तन पुलकित आनँद रस झेलि ॥
पट बंधन कंचुकि कुच परसत, कोप कपट निरखत कर पेलि ।
(जै श्री) हित हरिवंश लाल रस लंपट, धाइ धरत उर बीच सँकेलि ॥49॥

॥ 50 ॥

नवल नागरि नवल नागर किसोर मिलि,
कुञ्ज कौमल कमल दलनि सिज्या रची ।
गौर स्यामल अंग रुचिर तापर मिले,
सरस मनि नील मनौं मृदुल कंचन खची ॥
सुरत नीबी निबंध हेत पिय मानिनी,
प्रिया की भुजनि में कलह मोहन मची ।
सुभग श्रीफल उरज पानि परसत रोष,
हुंकार गर्व दृग भंगि भामिनि लची ॥
कोक कोटिक रभस रहसि 'हरिवंश हित',
विविध कल माधुरी किमपि नाँहिन बची ।
प्रनयमय रसिक ललितादि लोचन चषक,
पिवत मकरंद सुख रासि अंतर सची ॥50॥

॥ 51 ॥

दान दै री नवल किसोरी ।
माँगत लाल लाड़िलौ नागर, प्रगट भई दिन दिन की चोरी ॥

नव नारंग कनक हीरावलि, विद्रुम सरस जलज मनि गोरी ।
पूरित रस पीयूष जुगल घट, कमल कदलि खंजन की जोरी ॥
तोपैं सकल सौंज दामनि की, कत सतराति कुटिल दृग भोरी ।
नूपुर रव किंकिनी पिसुन घर, 'हित हरिवंश' कहत नहिं थोरी ॥51॥

॥ 52 ॥

देखौ माई सुंदरता की सीवाँ ।
व्रज नव तरुनि कदंब नागरी, निरखि करतिं अधग्रीवाँ ॥
जो कोउ कोटि कोटि कल्प लागि, जीवै रसना कोटिक पावै ।
तऊ रुचिर वदनारबिंद की, सोभा कहत न आवै ॥
देव लोक भूलोक रसातल, सुनि कवि कुल मति डरिये ।
सहज माधुरी अंग अंग की, कहि कासौं पटतरिये ॥
(जै श्री) हित हरिवंश प्रताप रूप गुन, वय बल स्याम उजागर ।
जाकी भ्रू विलास बस पसुरिव, दिन विथकित रस सागर ॥52॥

॥ 53 ॥

देखौ माई अबला के बल रासि
अति गज मत्त निरकुंस मोहन, निरखि बँधे लट पासि ॥
अबहीं पंगु भई मन की गति, बिनु उद्यम अनियास ।
तबकी कहा कहौं जब प्रिय प्रति, चाहति भृकुटि बिलास ॥
कच संजमन व्याज भुज दरसति, मुसकनि वदन विकास ।
हा हरिवंश अनीति रीति हित, कत डारति तन त्रास ॥53॥

॥ 54॥

नयौ नेह नव रंग नयौ रस, नवल स्याम वृषभानु किसोरी।
नव पीतांबर नवल चूनरी, नई नई बूँदनि भींजत गोरी॥
नव 'वृंदावन हरित मनोहर, नव चातक बोलत मोर मोरी।
नव मुरली जु मलार नई गति, श्रवन सुनत आये घन घोरी॥
नव भूषन नव मुकुट विराजत, नई नई उरप लेत थोरी थोरी।
(जै श्री) हित हरिवंश असीस देत मुख, चिरजीवौ भूतल यह जोरी॥54॥

॥ 55॥

आजु दोउ दामिनि मिलि बहसीं।
विच लै स्याम घटा अति नौतन, ताके रंग रसीं॥
एक चमकि चहुँ ओर सखी री, अपने सुभाइ लसी।
आई एक सरस गहनी में, दुहुँ भुज बीच बसी॥
अंबुज नील उमै विधु राजत, तिनकी चलन खसी।
(जै श्री) हित हरिवंश लोभ भेटन मन, पूरन सरद ससी॥55॥

॥ 56॥

हौं बलि जाऊँ नागरी स्याम।
ऐसौं ही रंग करौ निसि वासर, वृंदा विपिन कुटी अभिराम॥
हास विलास सुरत रस सींचन, पसुपति दग्ध जिवावत काम।
(जै श्री) हित हरिवंश लोल लोचन अली,
करहु न सफल सकल सुख धाम॥56॥

॥ 57 ॥

प्रथम जथामति प्रनऊँ, श्री वृंदावन अति रम्य।
श्रीराधिका कृपा बिनु, सबके मननि अगम्य॥
वर जमुना जल सींचन, दिनहीं सरद बसंत।
विविध भाँति सुमनसि के, सौरभ अलिकुल मंत॥
अरुन नूत पल्लव पर, कूँजत कोकिल कीर।
निर्तनि करत सिखी कुल, अति आनंद अधीर॥
बहत पवन रुचि दायक, सीतल मंद सुगंध।
अरुन नील सित मुकुलित, जहँ तहँ पूषन बंध ॥
अति कमनीय विराजत, मंदिर नवल निकुंज।
सेवत सगन प्रीतिजुत, दिन मीनध्वज पुंज॥
रसिक रासि जहँ खेलत, स्यामा स्याम किसोर।
उभे बाहु परिरंजित, उठे उनींदे भोर॥
कनक कपिस पट सोभित, सुभग साँवरे अंग।
नील वसन कामिनि उर, कंचुकि कसुँभी सुरंग॥
ताल रवाव मुरज डफ, बाजत मधुर मृदंग।
सरस उकति गति सूचत, वर बँसुरी मुख चंग॥
दोउ मिलि चाँचरि गावत, गौरी राग अलाप।
मानस मृग बल वेधत, भृकुटि धनुष दृग चाप॥
दोऊ कर तारिनु पटकत, लटकत इत उत जात।
हो हो होरी बोलत, अति आनंद कुलकात॥

रसिक लाल पर मेलति, कामिनि बंधन धूरि।
पिय पिचकारिनु छिरकत, तकि तकि कुंकुम पूरि।।
कबहुँ कबहुँ चंदन तरु, निर्मित तरल हिंडोल।
चढ़ि दोऊ जन झूलत, फूलत करत किलोल।।
वर हिंडोर झँकोरनी, कामिनि अधिक डरात।
पुलकि पुलकि वेपथ अँग, प्रीतम उर लपटात।।
हित चिंतक निजु चेरिनु, उर आनँद न समात।
निरखि निपट नैननि सुख, तृन तोरति वलि जात।।
अति उदार विवि सुंदर, सुरत सूर सुकुमार।
जै श्री हित हरिवंश करौ दिन, दोऊ अचल विहार।।57।।

॥ 58 ॥

तेरे हित लैन आई, बन ते स्याम पठाई,
हरति कामिनि घन कदन काम कौ।
काहे कौं करत बाधा, सुनि री चतुर राधा,
भैँटि कैँ मैँटि री माई प्रगट जगत भौं।।
देख रजनी नीकी, रचना रुचिर पी की,
पुलिन नलिन नभ उदित रौहिनी धौ।
तू तौ अब सयानी; तैं मेरी एकौ न मानी,
हौं तोसौं कहत हारी जुवति जुगति सौं।।
मोंहनलाल छबीलौ, अपने रंग रंगीलौ,
मोहत विहंग पसु मधुर मुरली रौ।

वे तो अब गनत तन जीवन जौवन तब,
जै श्री हित हरिवंश हरि भजहि भामिनि जौ ॥58॥

॥ 59॥

यह जु एक मन बहुत ठौर करि, कहु कौनें सचु पायौ।
जहँ तहँ विपति जार जुवती लौं, प्रगट पिंगला गायौ।
द्वै तुरंग पर जोरि चढ़त हठि, परत कौन पै धायौ।
कहिधौं कौन अंक पर राखै, जो गनिका सुत जायौ।।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रपंच बंच सब, काल व्याल कौ खायौ।
यह जिय जानि स्याम स्यामा पद, कमल संगी सिर नायौ ॥59॥

॥ 60॥

कहा कहौं इन नैननि की बात।
ये अलि प्रिया वदन अंबुज रस, अटके अनत न जात।।
जब जब रुकत पलक संपुट लट, अति आतुर अकुलात।
लंपट लव निमेष अंतर ते, अलप कलप सत सात।।
श्रुति पर कंज दृगंजन कुच बिच, मृग मद हवै न समात।
(जै श्री) हित हरिवंश नाभि सर जलचर, जाँचत साँवल गात ॥60॥

॥ 61॥

आजु सखी बन में जु बने प्रभु, नाचते हैं ब्रज मंडन।
वैस किसोर जुवति अंसुन पर, दियैं विमल भुज दंडन।।
कोंमल कुटिल अलक सुठि सोभित, अबलंबित जुग गंडन।

मानहु मधुप थकित रस लंपट, नील कमल के खंडन।।
हास विलास हरत सबकौ मन, काम समूह विहंडन।
जै श्री हित हरिवंश करत अपनौ जस, प्रकट अखिल ब्रह्मंडन॥61॥

॥ 62 ॥

खेलत रास दुलहिनी दूलहु।
सुनहु न सखी सहित ललितादिक, निरखि निरखि नैननि किन फूलहु।।
अति कल मधुर महा मौहन धुनि, उपजत हंस सुता के कूलहु।
थेई थेई वचन मिथुन मुख निसरत, सुनि सुनि देह दसा किन भूलहु।।
मृदु पद न्यास उठत कुंकुम रज, अद्भुत बहत समीर दुकूलहु।
कबहुँ स्याम स्यामा दसनांचल, कच कुच हार छुवत भुज मूलहु।।
अति लावन्य रूप अभिनय गुन, नाहिन कोटि काम समतूलहु।
भृकुटि विलास हास रस बरषत, (जै श्री) हित हरिवंश प्रेम रस झूलहु॥62॥

॥ 63 ॥

मोहन मदन त्रिभंगी। मोहन मुनि मन रंगी।
मोहन मुनि सघन प्रगट परमानंद, गुन गंभीर गुपाला।।
सीस किरीट श्रवण मनि कुंडल, उर मंडित बन माला।
पीतांबर तन धातु विचित्रित, कल किंकिनि कटि चंगी।।
नख मनि तरनि चरन सरसीरुह, मोहन मदन त्रिभंगी।
मोहन बैनु बजावै। इहिं रव नारि बुलावै।।
आई ब्रज नारि सुनत बंसी रव, गृह पति बंधु विसारे।

दरसन मदन गुपाल मनोहर, मनसिज ताप निवारे ।।
हरषित बदन बैक अवलोकन, सरस मधुर धुनि गाव ।
मधुमय श्याम समान अधर धरे, मोहन बैनु बजावे ।।
रास रचा बन माँही । विमल कलप तरु छाँहीं ।।
विमल कलपतरु तीर सुपेशल, सरद रैन वर चंदा ।
सीतल मंद सुगंध पवन बहै, तहाँ खेलत नंद नंदा ।।
अदभुत ताल मृदंग मनोहर, किंकिनि शब्द कराहीं ।
जमुना पुलिन रसिक रस सागर, रास रच्यो बन माँहि ।।
देखत मधुकर केली । मोहे खग मृग बेली ।
मोहे मृगधैनु सहित सुर सुंदरि, प्रेम मगन पट छूटे ।।
उडगन चकित थकित ससि मंडल, कोटि मदन मन लूटे ।
अधर पान परिरंभन अति रस, आनँद मगन सहेली ।
जै श्री हित हरिवंश रसिक सचु पावत, देखत मधुकर केली ।।63 ।।

॥ 64 ॥

वैणु माई बाजै बंसीवट ।

सदा बसंत रहत वृंदावन, पुलिन पवित्र सुभग यमुना तट ।।
जटित क्रीट मकराकृत कुंडल, मुख अरविंद भँवर मानौं लट ।
दसननि कुंद कली छवि लज्जित, सज्जित कनक समान पीत पट ।।
मुनि मन ध्यान धरत नहिं पावत, करत विनोद संग बालक भट ।
दास अनन्य भजन रस कारन, हित हरिवंश प्रकट लीला नट ।।64 ।।

॥ 65 ॥

मदन मदन धन निकुंज खेलत हरि, राका रुचिर सरद रजनी।
यमुना पुलिन तट सुरतरु के निकट, रचित रास चलि मिलि सजनी।।
वाजत मृदु मृदंग नाचत सबै सुधंग, तैं न श्रवन सुन्यौ बैनु बजनी।
जैश्री हित हरिवंश प्रभु राधिका रमन मोकौं,
भावै माई जगत भगत भजनी।।65।।

॥ 66 ॥

विहरत दोऊ प्रीतम कुंज।
अनुपम गौर स्याम तन सोभा, वन वरषत सुख पुंज।।
अद्भुत खेत महा मनमथ कौ, दुंदुभि भूषन राव।
जूझत सुभट परस्पर अँग अँग, उपजत कोटिक भाव।।
भर संग्राम अमित अति अबला, निद्रायत काले नैन।
पिय के अंक निसंक तंक तन, आलस जुत कृत सैन।।
लालन मिस आतुर पिय परसत, उरू नाभि उरजात।
अद्भुत छटा विलोकि अवनि पर, विथकित वेपथ गात।।
नागरि निरखि मदन विष व्यापित, दियौ सुधाधर धीर।
सत्वर उठे महामधु पीवत, मिलत मीन मिव नीर।।
अवहीं मैं मुख मध्य विलोके, बिंबाधर सु रसाल।
जागृत त्यों भ्रम भयौ पर्यौ मन, सत मनसिज कुल जाल।।
सकृदपि मयि अधरामृतमुपनय, सुंदरि सहज सनेह।
तव पद पंकज को निजु मंदिर, पालय सखि मम देह।।

प्रिया कहति कहु कहाँ हुते पिय, नव निकुंज वर राज।
सुंदर वचन रचन कत वितरत, रति लंपट बिनु काज।।
इतनों श्रवन सुनत मानिनि मुख, अंतर रह्यौ न धीर।
मति कातर विरहज दुख व्यापित बहुतर स्वास समीर।।
(जै श्री) हित हरिवंश भुजनि आकरषे लै राखे उर माँझ।
मिथुन मिलत जू कछुक सुख उपज्यौ त्रुटि लव मिव भई साँझ।।66।।

॥ 67 ॥

रुचिर राजत वधू कानन किसोरी।
सरस षोडस कियें, तिलक मृगमद दियें,
मृगज लोचन उबटि अंग सिर खोरी।।
गंड पंडीर मंडित चिकुर चंद्रिका,
मेदिनि कबरि गुंथित सुरंग डोरी।
श्रवण ताटक कै चिबुक पर बिंदु दै,
कसूँभी कंचुकी दुरै उरज फल कौं री।।
वलय कंकन दोति, नखन जावक जोति,
उदर गुन रेख पट नील कटि थोरी।
सुभग जघन स्थली कनित किंकिनि भली,
कोक संगीत रस सिंधु झक झोरी।।
विविध लीला रचित रहसि हरिवंश हित,
रसिक सिरमौर राधा रमन जोरी।

भृकुटि निर्जित मदन मंद सस्मित वदन,
किये रस विवस घन स्याम पिय गोरी।।67।।

।। 68।।

रास में रसिक मोहन बने भामिनी।
सुभग पावन पुलिन सरस सौरभ नलिन,
मत्त मधुकर निकर सरद की जामिनी।।
त्रिविध रोचक पवन ताप दिनमनि दवन,
तहाँ ठाढ़े रमन संग सत कामिनी।
ताल बीना मृदंग सरस नाचत सुधंग,
एक ते एक संगीत की स्वामिनी।।
राग रागिनि जमी विपिन वरसत अमी,
अधर बिंबनि रमी मुरलि अभिरामिनी।
लाग कट्टर उरप सप्त सुर सौं सुलप
लेति सुंदर सुघर राधिका नामिनी।।
तत्त थेई थेई करत गतिव नौतन धरत,
पलटि डगमग ढरति मत्त गज गामिनी।
धाइ नवरंग धरी उरसि राजत खरी,
उभय कल हंस हरिवंश घन दामिनी।।68।।

॥ 69 ॥

मोहनी मोहन रंगे, प्रेम सुरंगे,
मंत्र मुदित कल, नाचत सुधंगे।
सकल कला प्रवीन, कल्याण रागिनी लीन,
कहत न बनै, माधुरी अंग अंगे।।
तरनि तनया तीर, त्रिविध सखी समीर।
मानौं मुनी व्रत धरयौ, कपोती कोकिला कीर।।
नागरि नव किशोर, मिथुन मनसि चोर।
सरस गावत दोऊ, मंजुल मंदर घोर।।
कंकन किंकिनि धुनि, मुखर नूपुरनि सुनि।
(जै श्री) हित हरिवंश रस, वरषत नव तरुनि ॥ 69 ॥

॥ 70 ॥

आजु सँभारत नाँहिन गोरी।
फूली फिर मत्त करिनी ज्यौं, सुरत समुद्र झकोरी।।
आलस वलित अरुन धूसर मषि, प्रगट करत दृग चोरी।
पिय पर करुन अमी रस बरषत, अधर अरुनता थोरी।।
बाँधत भंग उरज अंबुज पर, अलकनि बंध किसोरी।
संगम किरचि किरचि कंचुकि बँध, सिथिल भई कटि डोरी।।
देति असीस निरखि जुवती जन, जिनकें प्रीति न थोरी।
(जै श्री) हित हरिवंश विपिन भूतल पर, संतत अविचल जोरी।।70।।

॥ 71 ॥

स्याम सँग राधिका रास मंडल बनी।
बीच नंदलाल ब्रजवाल चंपक वरन,
ज्यौव घन तडित बिच कनक मरकत मनी॥
लेति गति मान तत्त थेई हस्तक भेद,
स रे ग म प ध नि ये सप्त सुर नंदिनी।
निर्त रस पहिर पट नील प्रगटित छबी,
वदन जनु जलद में मकर की चंदिनी॥
राग रागिनि तान मान संगीत मत,
थकित राकेश नभ सरद की जामिनी।
(जै श्री) हित हरिवंश प्रभु हंस कटि केहरी,
दूरि कृत मदन मद मत्त गज गामिनी॥71॥

॥ 72 ॥

सुंदर पुलिन सुभग सुख दाइक।
नव नव घन अनुराग परस्पर, खेलत कुँवर नागरी नांइक।
सीतल हंस सुता रस बीचिनि, परसि पवन सीकर मृदु वरषत।
वर मंदार कमल चंपक कुल, सौरभ सरसि मिथुन मन हरषत।
सकल सुधंग विलास परावधि, नाचत नवल मिले सुर गावत।
मृगज मयूर मराल भ्रमर पिक, अदभुत कोटि मदन सिर नावत।
निर्मित कुसुम सैन मधु पूरित, भाजन कनक निकुंज विराजत।
रजनी मुख सुख रासि परस्पर, सुरत समर दोऊ दल साजत॥

विट कुल नृपति किसोरी कर धृत, बुधि बल नीबी बंधन मोचत।
'नेति नेति' वचनामृत बोलत, प्रनय कोप प्रीतम नहिं सोचत।
(जै श्री) हित हरिवंश रसिक ललितादिक, लता भवन रंध्रनि अवलोकत।
अनुपम सुख भर भरित विवस असु, आनंद वारि कंठ दृग रोकत॥72॥

॥ 73 ॥

खंजन मीन मृगज मद मेंटत, कहा कहौं नैननिं की बातैं।
सनी सुंदरी कहाँ लौं सिखई, मोहन बसीकरन की घातैं।
बंक निसंक चपल अनियारे, अरुन स्याम सित रचे कहाँ तैं।
डरत न हरत परयौ सर्वसु, मृदु मधुमिव मादिक दृग पातैं॥
नैक प्रसन्न दृष्टि पूरन करि, नहिं मोतन चितयौ प्रमदा तैं।
(जै श्री) हित हरिवंश हंस कल गामिनि, भावै सो करहु प्रेम के नातैं॥73॥

॥ 74 ॥

काहे कौं मान बढ़ावतु है, बालक मृग लोचनि।
हौब डरनि कछु कहि न सकति, इक बात सँकोचनी।
मत्त मुरली अंतर तव गावत, जागृत सैन तवाकृति सोचनि।
(जै श्री) हित हरिवंश महा मोहन पिय, आतुर विट विरहज दुख मोचनि॥74॥

॥ 75 ॥

हौं जु कहति इक बात सखी, सुनि काहे कौं डारत।
प्रानरवन सौं क्योंऽब करत, आगस बिनु आरत॥
पिय चितवत तव चंद वदन तन, तूँ अधमुख निजु चरन निहारति।

वे मृदु चिबुक प्रलोड प्रबोधत, तूँ भामिनि कर सौँ कर टारति।।
विबस अधीर विरह अति कतर, सर औसर कछुवै न विचारति।
(जै श्री) हित हरिवंश रहसि प्रीतम मिलि, तृषित नैन काहे न प्रतिपारति।।75।।

॥ 76 ॥

नागरीं निकुंज ऐन किसलय दल रचित सैन,
कोक कला कुसल कुँवरि अति उदार री।
सुरत रंग अंग अंग हाव भाव भृकुटि भंग,
माधुरी तरंग मथत कोटि मार री।
मुखर नूपुरनि सुभाव किंकनी विचित्र राव,
विरमि विरमि नाथ वदत वर विहार री।
लाडिली किशोर राज हंस हंसिनी समाज,
सींचत हरिवंश नैन सुरस सार री।।76।।

॥ 77 ॥

लटकति फिरति जुवति रस फूली।
लता भवन में सरस सकल निसि, पिय सँग सुरत हिंडोरे झूली।।
जदपि अति अनुराग रसासव, पान विवस नाहिन गति भूली।
आलस वलित नैन विगलित लट, उर पर कछुक कंचुकी खूली।।
मरगजी माल सिथिल कटि बंधन, चित्रित कज्जल पीक दुकूली।
(जै श्री) हित हरिवंश मदन सर जरजर ,
विथकित स्याम सँजीवन मूली।।77।।

॥ 78॥

सुधंग नाचत नवल किसोरी।

थेई थेई कहति चहति प्रीतम दिसि, वदन चंद मनौं त्रिषित चकोरी॥

तान बंधान मान में नागरि, देखत स्याम कहत हो हो होरी।

हित हरिवंश माधुरी अँग अँग, बरवस लियौ मोहन चित चोरी॥78॥

॥ 79॥

रहसि रहसि मोहन पिय के संग, री लड़ैती अति रस लटकति।

सरस सुधंग अंग में नागरि, थेई थेई कहति अवनि पद पटकति॥

कोक कला कुल जानि सिरोमनि, अभिनय कुटिल भृकुटियनि मटकति।

विवस भये प्रीतम अलि लंपट, निरखि करज नासा पुट चटकति ॥

गुन गनु रसिक राइ चूड़ामनि, रिझवति पदिक हार पट झटकति।

हित हरिवंश निकट दासीजन, लोचन चषक रसासव गटकति॥79॥

॥ 80॥

वल्लवी सु कनक वल्लरी तमाल स्याम संग,

लागि रही अंग अंग मनोभिरामिनी।

वदन जोति मनौं मयंक अल तिलक छबि कलंक,

छपति स्याम अंक मनौं जलद दामिनी॥

विगत वास हेम खंभ मनौं भुवंग वैनी दंड,

पिय के कंठ प्रेम पुंज कुंज कामिनी।

(जै श्री) सोभित हरिवंश नाथ साथ सुरत आलस वंत,
उरज कनक कलस राधिका सुनामिनी ॥४०॥

॥ ४१ ॥

वृषभानु नंदिनी मधुर कल गावै।
विकट औंघर तान चर्चरी ताल सौं,
नंदनंदन मनसि मोद उपजावै।।
प्रथम मज्जन चारु चीर कज्जल तिलक,
श्रवण कुंडल वदन चंदनि लजावै।
सुभग नकबेसरी रतन हाटक जरी,
अधर बंधूक दसन कुंद चमकावै।।
वलय कंकन चारु उरसि राजत हारु,
कटिव किंकिनी चरन नूपुर बजावै।
हंस कल गामिनी मथति मद कामिनी,
नखनि मदयंतिका रंग रुचि द्यावे ।।
निर्त्त सागर रभसि रहसि नागरि नवल,
चंद चाली विविध भेदनि जनावै।
कोक विद्या विदित भाइ अभिनय निपुन,
भू विलासनि मकर केतनि नचावै।।
निविड़ कानन भवन बाहु रंजित रवन,
सरस आलाप सुख पुंज बरसावै।

उभै संगम सिंधु सुरत पूषन बधु,
द्रवत मकरंद हरिवंश अली पावै ॥८१॥

॥ ८२ ॥

नागरता की राशि किसोरी।
नव नागर कुल मौलि साँवरी, वर बस कियो चितै मुख मोरी ॥
रूप रुचिर अंग अंग माधुरी, विनु भूषन भूषित ब्रज गोरी।
छिन छिन कुसल सुधंग अंग में, कोक रभस रस सिंधु झकोरी।
चंचल रसिक मधुप मौहन मन. राखे कनक कमल कुच कोरी।
प्रीतम नैन जुगल खंजन खग, बाँधे विविध निबंधन डोरी।
अवनी उदर नाभि सरसी में, मनौं कछुक मदिक मधु घोरी।
(जै श्री) हित हरिवंश पिवत सुंदर वर,
सींव सुदढ़ निगमनि की तोरी ॥८२॥

॥ ८३ ॥

छाँड़िदैं मानिनी मान मन धरिबौ।
प्रनत सुंदर सुघर प्रानवल्लभ नवल,
वचन आधीन सौं इतौ कत करिबौं ।
जपत हरि विवस तव नाम प्रतिपद विमल,
मनसि तव ध्यान ते निमिष नहिं टरिबौ।
घटति पलु पलु सुभग सरद की जामिनी,
भामिनी सरस अनुराग दिसि ढरिबौ ॥

हौं जु कछु कहति इक बात सुनो मानि सखि,
सुमुखि बिनु काज घन विरह दुख भरिवौं।
मिलत हरिवंश हित' कुंज किसलय सयन,
करत कल केलि सुख सिंधु में तरिबौ ॥ 83 ॥

॥ 84 ॥

आजुब देखियत है हो प्यारी जू रंग भरी।
मोपै न दुरति चोरी वृषभानु की किशोरी,
सिथिल कटि की डोरी, नंद के लालन सौं सुरत लरी ॥
मोतियन लर टूटी चिकुर चंद्रिका छूटी,
रहसि रसिक लूटी गंडनि पीक परी।
नैननि आलस बस अधर बिंब न रस,
पुलक प्रेम परस हित हरिवंश री राजत खरी ॥ 84 ॥

श्रीहित चौरासी-फलश्रुति

श्रीहित सेवक जी कृत

समुझौ श्रीहरिवंश सु वानी। रसद मनोहर सब जग जानी ॥
कोमल-मधुर-ललित पद श्रैनी। रसिकन कौं जु परम सुखदैनी ॥
श्रीहरिवंश नाम उच्चार। नितबिहार रस कह्यौ अपारा ॥

गो. श्रीहित वनचन्द्र जी कृत-

भव-जल-निधि कौ नाव, काम-पावक कौ पानी।

प्रेम-भक्ति कौ मूल, मोद-मंगल-सुखदानी ॥
निगम-सार-सिद्धान्त, संत-विश्राम मधुर वर।
रसिकनि कौ रस-सार, सकल अक्षर रस कौ घर ॥

चौरासी हरिवंश कृत, पढ़ें-सुनैँ निशि-भोर।
छुटैँ चौरासी भ्रमनि तें, निरखैँ जुगल किशोर ॥

गो. श्रीहित रूपलाल जी कृत-

निरखैँ जुगल किशोर, भोर अरु रैन न जानें।
पियें रूप-रस-मत्त भयौ, कछु मनहिँ न आनेँ ॥

प्रेम-लक्षणा-भक्ति, होइ हिय आनँदकारी।
अरु वृन्दावन-वास, सखी सुख कौ अधिकारी ॥
कुंज महल की टहल-सुख, संपति दंपति पाइहै।
जैश्रीरूपलाल हित प्रीति सौँ, जो चौरासी गाइहै।

श्रीहित धरनीधरदास जी कृत-

वानी हित हरिवंश की, सागर तें गम्भीर।
कही गई मोपैँ तिती, जितौ गहैँ खग नीर ॥
जुग रस माते रसिकवर, तिनमें होइ जु वास।
हित धरनीधरदास की, पुरवौँ येईँ आस ॥